THE DEPUTY CHAIRMAN: He not only mentioned about the law and order situation, but he also talked about insurgency. Are you supporting insurgency? Then I am sorry ...(*Interruptions*)...

MR. MD. SALIM, are you going to speak on this subject? or is it another subject? ...(*Interruptions*)... आपका स्पेशल मेंशन है।

RE DEFAMATORY REMARKS ON MAHATMA GANDHI TELECAST ON STAR TV.

SHRI MD. SALIM (West Bengal): Madam, this is a very serious issue. I would request the Members to support me cutting across party lines. Mahatma Gandhi is the Father of the Nation ...(*Interruptions*)... With deep anguish I would like to bring this to your notice and, through you, to the notice of the entire nation. I am against mentioning of brand names or the names of companies here in this House. But I am telling you about a Hong Kong based Satellite Television company which is beaming programmes to the entire subcontinent. Of course, the programme is very popular. There was a special "Chat Show" On Thursday. In this programme, they deliberately invite people who make controversial remarks so as to make the programme popular.

पिछले कई हफ्तों से दिखाए जा रहे हैं। ओ० के० इफ यू परमिट मी, निक्कीज़ टुनाइट, जिस रोज़, इश्तहार, दिया अखबार में टेलीविज़न कंपनी ने, दिल्ली से प्रेस कांफ्रेंस करके, एक आधी नंगी तस्वीर दे करके पूरी जनता को यह बताया गया कि कंट्रोवर्शियल प्रोग्राम शुरू हो रहे हैं, काफी पॉपुलर। मैं उसके भी विरोध में था। ...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य: ये तो प्रोमोट कर रहे हैं।

श्री मोहम्मद सलीम: प्लीज़...और उसके बाद से जो प्रोग्राम हुए उसमें, बहुत ही बेहूदा, गलत और उसको डिबेटेबल और कंट्रोवर्शियल बनाने के लिए महिलाओं के शरीर के बारे में चर्चा हमारे ड्राइंग रूम में बैठ करके लोगों को यह सिखाया जा रहा है? मैं एक नौजवान की हैसियत से यह कहना चाहता हूं कि हमारे जो चैट होते हैं, जो गपशप होती है, चाहे वह कॉलेज कैम्पस में हो, चाहे युनिवर्सिटी में हो, चाहे हमारे घरों में हो, चाहे क्लबों में हो, डेलीब्रेटली इसको मोटिवेट किया जा रहा है कि किस तरह का वातावरण होना चाहिए, किस तरह की बातचीत होनी चाहिए। हमारी एक संस्कृति है, हमारी एक परम्परा है, मैं उसमें नहीं जा रहा मैडम। अभी पिछले थर्सडे को जो हुआ वहां पर, कोई गे-ऐक्टिविस्कट को बुलाया गया और उससे डेलीब्रेटली जो होस्टेस है, इंटरव्यूअर, उसने क्वेश्चन किए, उसके प्रश्न किए। उनका नोन ओपिनियन है, पहले से ही इस बारे में डिबेट हो चुकी है हमारे मुल्क में, वे कहते हैं राष्ट्रपिता को* मैं नहीं चाह रहा था उस शब्द को यहां बोलने के लिए ....(व्यवधान)....

†श्री मोहम्मद सलीम: प्लीज़...और उसके बाद से जो प्रोग्राम हुए उसमें बहुत ही बेहूदा, गलत और उसको डिबेटेबल और कंट्रोवर्शियल बनाने के लिए महिलाओं के शरीर के बारे में चर्चा हमारे ड्राइंग रूम में बैठ करके लोगों को यह सिखाया जा रहा है। मैं एक नौजवान की हैसियत से यह कहना चाहता हूं कि हमारे जो चैट होते हैं। जो गपशप होती है, चाहे वह कॉलेज कैम्पस में हो, चाहे युनिवर्सिटी में हो, चाहे हमारे घरों में हो, चाहे क्लबों में हो, डेलीब्रेटली इसको मोटिवेट किया जा रहा है कि किस तरह का वातावरण होना चाहिए, किस तरह की बातचीत होनी चाहिए। हमारी एक संस्कृति है, हमारी एक परम्परा है, मैं उसमें नहीं जा रहा मैडम। अभी पिछले थर्सडे को जो हुआ वहां पर, कोई गे-ऐक्टिविस्कट को बुलाया गया और उससे डेलीब्रेटली जो होस्टेस है, इंटरव्यूअर, उसने क्वेश्चन किए, उसके प्रश्न किए। उनका नोन ओपिनियन है, पहले से ही इस बारे में डिबेट हो चुकी है हमारे मुल्क में, वे कहते हैं राष्ट्रपिता को* मैं नहीं चाह रहा था उस शब्द को यहां बोलने के लिए ....(व्यवधान)....

برٹیلی جو ھو سیشن ہے - انٹرویو اس نے
کو پیش کیے - اسنے پرشن کیے - انمانان
او پینین ہے - پہلے سے ہی اس بارے میں
ڈبیٹ ہو چکی ہے - ہمارے ملک میں وہ
بکتے ہیں - راشٹرپتا کو میں نہیں چاہ رہا تھا
اس شبد کو یہاں بولنے کیلئے ۔"مداخلت"۔]

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Salim, just a minute. Iqbal Sahedb please sit down. Mr. Salim, we are all anguished because all of us have seen the news-item. I have not seen the programme. But I read about it in the newspapers. It somebody makes such a derogatory remark, condemnable remark, we should not repeat it here. It should not go on record. That remark will not go on record. Its form should be different. Such derogatory remarks will not become part of the proceedings. But the derogatory nature would be there.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM (Uttar Pradesh): How can it be condemned? ...(*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Everybody knows about this.

विपक्ष के नेता श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहेबा, मैं सिर्फ यह अर्ज़ करूंगा कि अगर इस किस्म की बेहूदा चीज़ हुई है तो उसे रिकार्ड पर आना चाहिये ताकि जिन लोगों ने इस किस्म ..(**व्यवधान**)... ज़रा सुनिये साहब। इस किस्म के जुर्म का इरतिकाब जहां हुआ है, उनको भरपूर सज़ा देने के लिए कुछ न कुछ आना चाहिये। कैसे पता लगेगा?

How can this sort of things happen in this country? Something should be done. Some serious action should be taken.

सदर साहेबा, वह चीज़ रिकार्ड पर नहीं आएगी तो जिन लोगों के खिलाफ प्रोसीड करना चाहिये, कैसे किया जाएगा?

†[]Transliteration in Arabic Script.

†[شری سکندر بخت: صدر صاحبہ - میں
صرف یہ عرض کرونگا کہ اگر اس قسم کی بیہودہ
چیز ہوئی ہے تو اسے ریکارڈ پر آنا چاہیئے
تاکہ جن لوگوں نے اس قسم ۔"مداخلت"۔
ذرا سنئے صاحب - اس قسم کے جرم کا ارتکاب
جہاں ہوا ہے - انکو بھرپور سزا دینے کیلئے
کچھ نہ کچھ آنا چاہیئے - کیسے پتہ لگیگا -]

How can this sort of things happen in this country? Something should be done. Some serious action should be taken.

صدر صاحبہ - وہ چیز ریکارڈ پر نہیں
آئیگی تو جن لوگوں کے خلاف پروسیڈ کرنا
چاہیئے - کیسے کیا جائیگا -]

श्री मोहम्मद सलीम: जो जहरीला शब्द उन्होंने इस्तेमाल किया, मैं उसका विरोधी हूं। इसलिए जिन लोगों ने किया था, मैं उस कम्पनी का नाम नहीं लेना चाहता था, उस होस्टेस का भी नाम नहीं लेना चाहता था। मेडम लेकिन सवाल यह है यह जो इम्पीरियलिस्ट मीडिया है, I am now coming to the serious part of the question. वह डेलीब्रेटली अटेम्प्ट कर रहा है वर्ल्ड वाइड हमारे जो नेशनल मूवमेंट्स हैं, आज़ादी की लड़ाई, साम्राज्यवाद के विरोध में हम लड़े हैं, जो हमारी परम्परा है, जो हमारे मूल्य हैं, उनको डेलीब्रेटली डिसमेंटल करना चाहते हैं, मलाइन करना चाहते हैं, एब्यूज़ करना चाहते है। इसलिए सिर्फ भारत के लिए ही नहीं महात्मा गांधी ने पूरे विश्व में तीसरी दुनियां के लिए आजादी की बात कही, समाजवाद की बात कही, करोड़ों जनता को रास्ता दिखाया, उनके बारे में खतरनाक तरीके से बुराई फैला रहे हैं। इसलिए हमारा सरकार से कहना है कि यह जो कोशिश कर रहे

†[]Transliteration and Arabic Script.

है, हम खामोश बैठे नहीं रह सकते हैं। यहां जब केबल टी॰ वी नेटवर्क के बारे में बात हुई, सुषमा जी यहां बैठी हुई हैं। उनके प्रश्न के उत्तर में श्री सिंहदेव जी ने कहा था कि यहां सेटेलाइट जो बढ़ रहे हैं, उनको गवर्नमेंट मोनिटर करेगी। कैसे आप मोनिटर कर रहे हैं, मुझे मालूम नहीं है। अभी मैं पूछना चाहता हूं, एक उदाहरण के रूप में ले लीजिये, हिन्दुस्तान में आज भी किसी भारतीय को अगर उसके पिता के नाम में गलत लफ्ज़ कहा जाए तो वह तमाचा मार देगा। 90 करोड़ का हमारा राष्ट्र है और हमारे राष्ट्रपिता को गाली देते हैं तो राष्ट्र की हैसियत से क्या हम रियेक्ट नहीं कर सकते, सरकार कुछ नहीं कह सकती? हमारे राष्ट्र का प्रतीक, राष्ट्रीय सम्मान की मर्यादा रखने के लिए होम मिनिस्टर साहब कांस्टीट्यूशनली रिस्पोंसिबल, हैं। यह सिर्फ सिंहदेव जी का मामला नहीं है। वह भी सदन में बैठे हुए हैं, हम उनसे पूछना चाहते हैं। स्टार टी॰ वी॰ वाले कहते हैं कि यह प्रोग्राम था अनएडिटेड था। मैं डिटेल में नेटवर्क के बारे में कह रहा हूं कि यह अनएडिटेड नहीं था। 13 एपीसोड्स एक साथ रिकार्ड किये जाते हैं। उनकी एडिटेड होते हैं। एक प्रोड्यूसर खुद कहते हैं और फिर कम्पनी खुद रिएडिट करती है। जो इन्टरव्यु ले रहे थे उन्हें यह मालूम था कि ऐसा जवाब आएगा इसलिए दांत निपोर कर हंस रही थी। वहां पर उसने उसका प्रतिकार क्यों नहीं किया, यह क्यों नहीं कहा कि ऐसी बात मत करो, ऐसा नहीं कहना चाहिये। मेडम, इंटरव्युर और प्रोड्यूसर सब भारतीय हैं। हांगकांग बेस्ड स्टार टी॰ वी॰ कम्पनी हो सकती है लेकिन भारत में रह कर, भारत में प्रोग्राम रिकार्ड हुए, रिएडिट हुए, यहां से प्रोग्राम भेजा गया, उसके बारे में सरकार क्या व्यवस्था लेती है, यह सब सदन को बताएं। ...(व्यवधान)...

†श्री मोहम्मद सलीम: जो हरिलाल शब्द आपने इस्तेमाल किया- मैं इसका विरोध करता हूं। इसलिए जिन लोगों ने किया था- मैं उस कंपनी का नाम नहीं लेना चाहता था- उस सोसायटी का भी नाम लेना नहीं चाहता था- मेडम- लेकिन सवाल यह है कि जो इम्पीरियलिस्ट मीडिया है-

†ڈاکٹر محمد سلیم: جو ہریلال شبد آپ نے استعمال کیا- میں اسکا ورودھ کرتا ہوں- اسلئے جن لوگوں نے کیا تھا- میں اس کمپنی کا نام نہیں لینا چاہتا تھا- اس سوسائٹی کا بھی نام لینا نہیں چاہتا تھا- میڈم- لیکن سوال یہ ہے کہ جو امپیریلسٹ میڈیا ہے-

وہ ڈیپلی پریشلی انفلوئنس کر رہا ہے ورلڈ وائڈ ہمارے جو نیشنل سوورینٹی پر- آزادی کی لڑائی- سامراجیہ واد کے ورودھ میں ہم لڑ رہے ہیں- جو ہماری پرمپرائیں جو ہمارے موریلس ہیں- انکو ڈیپلی پریشلی ڈسمینٹل کرنا چاہتے ہیں- ملائن کرنا چاہتے ہیں ایروڈ کرنا چاہتے ہیں- اسلئے صرف بھارت کیلئے ہی نہیں مہاتما گاندھی نے پورے وشو میں تیسری دنیا کیلئے آزادی کی بات کہی- سماجوادی بات کہی- کروڑوں جنتا کو راستہ دکھایا- انکے بارے میں خطرناک طریقے سے برائی پھیلا رہے ہیں- اسلئے ہمارا سرکار سے کہنا ہے کہ یہ جو کوشش کر رہے ہیں ہم خاموش بیٹھے نہیں رہ سکتے ہیں- یہاں جب کیبل ٹی- وی- نیٹ ورک کے بارے میں بات ہوئی- سشما جی یہاں بیٹھی ہوئی ہیں- انکے پرشن کے اتر میں شری سنگھ دیو جی نے کہا تھا کہ یہاں سیٹلائٹ

جو بڑھ رہے ہیں- انکو گورنمنٹ مانیٹر کریگی- کیسے آپ مانیٹر کر رہے ہیں- مجھے معلوم نہیں ابھی میں پوچھنا چاہتا ہوں- ایک اودھارن کے روپ میں لے لیجئے- ہندوستان میں آج بھی کسی بھارتیہ کو اگر اسکے پتا کے نام میں غلط لفظ کہا

SHRI S. JAIPAL REDDY (ANDHRA PRADESH): Madam, I gave a notice ...(*interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have the name of Mr. Malkani. I have the name of Mr. Jaipal Reddy and I have the name of Mr. Janeshwar Misra.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, I gave a notice ...(*interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. I have to inform the House that the Chairman has called a meeting of the Business Advisory Committee at 12.30 p.m. I will have to go to the meeting. I would like to ask Mr. V. Narayanasamy to take the Chair. Otherwise, I will have to inform the Chairman that I will be coming to the meeting a little late ... (*interruptions*)...

SHRI P. UPENDRA: Madam, please say something ...(*interruptions*)... Please say something and conclude the matter. Please say something ...(*interruptions*)...

SHRI SIKANDER BAKHT: Madam, I want to make two points ...(*interruptions*)...

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, I gave a notice ...(*interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I want to speak. But I have to go to the meeting. That is why I have asked Mr. V. Narayanasamy to come and preside over the House.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, please send word to the Chairman.

SHRI S. JAIPAL REDDY: We will react, because this is something ...(*interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: All right. If everybody is ...(*interruptions*)... I wanted to say that the Chairman has called the meeting. I will have to inform the Chairman that this matter is very serious. The Home Minister has to be here. So, at least courtesy demands that we should tell him that we will be late by five or ten minutes. ...(*interruptions*)... That is all that I am saying. What else am I saying? It should not be misunderstood that such an important discussion is going on and the Home Minister is leaving, the Leader is leaving, the other leaders are leaving and I am leaving. That is the reasons why I want to put it on record. This is the thing.

Yes, Jaipal Reddy ji ...(*interruptions*)...

SHRI K.R. MALKANI (DELHI): Madam, ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: His name is there.

SHRI K.R. MALKANI: But you called my name.

उपसभापतिः आपका भी है। आपको भी बुला लेती हूं। वे खड़े हो गए थे ...(**व्यवधान**)...

SHRI K.R. MALKANI: But I was called to speak first.

उपसभापतिः इस प्रकार क्यों झगड़ा कर रहे हैं मलकानी जी फर्स्ट और सेकेंड के लिए। आप भी बोलिएगा।

SHRI K.R. MALKANI: All right. Let him speak.

उपसभापतिः आप बोलिए ...(**व्यवधान**)... ठीक है आप बोल दीजिए।

श्री के० आर० मलकानीः आप बोल दीजिए।

उपसभापतिः चलिए आप बोल दीजिए।

श्री के० आर० मलकानीः नहीं, नहीं, छोड़िए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Come on. You speak.

बोलिए ना मलकानी जी, ऐसा क्या है ... (**व्यवधान**)... सबको मालूम है कि आपका कमिटमेंट गांधी जी के साथ है। आप जरूर बोलिए।

SHRI K.R. MALKANI: Madam, Star TV came up with this programme. We all know what it is. I do not want to repeat it. It is unmentionable. There has been a vile abuse not only of Mahatama Gandhi but even of his mother. Nothing like this has been heard of or even imagined before in India. This was not an accident. The interviewer knew what the opinion of the interviewee was about Mahatma Gandhi; it was scandalous. She asked this question and the man was only too willing to come with this scandalous response. These johnies now say that they have apologised. This is a dishonest apology. It is no apology because this programme was produced six weeks back. The people in charge viewed it and, according to the interviewee, certain items were considered objectionable and these were deleted. But the scandulous remarks about Gandhiji were not considered objectionable. Obviously, there was something worse also in it. This is not a simple affair, Madam. I regard it as an act of cultural terrorism. It is an attack on our national life, on our national culture, on our national honour and on our national ideas. Their only objective is to shock and scandalise the people so that they can have more viewership, so that they can have more advertising revenue. I think the only way in which any self-respecting Government can respond is to ask the Star TV to shut their shop in India...(*interruptions*)... Madam, their Head Office is in Hongkong but they have an establishment here. They have their managers here. They must be thrown out. The world must know that India is a country which can say 'no'. They cannot go about assaulting us the way they have been doing it for the last four years. I am extremely sorry to say this. They have been attacking us, our economy ...(*interruptions*)... our everything. But this assault on the Indian culture is something wholly unacceptable. We expect a response from the Government.

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा): उनको प्रासीक्यूट करिए, जेल भेजिए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Jaipal Reddyji.

SHRI S. JAIPAL REDDY Madam, I do not want to go into the expressions used by the gay rights activist, Mr. Ashok Row Kavi. I am surprised that Mrs. Nikki Bedi, who was the interviewer, was also privy to this kind of process. Of course, she has made her own contribution to the vulgarisation of sex on TV. That is another matter. But it is vandalisation of our heritage. We really cannot be privy to this.

Newspapers have reported that the great-grandson of Mahatam Gandhi has decided that the great-grandson of Mahatam Gandhi has decided to sue the Star TV and the people concerned. We are all the inheritors of Gandhi's legacy. This onerous task should not be left to Mahatma Gadhi's great-grandson alone. We should all take it as an insult heaped on the nation.

It is also intriguing to note that the Government of India and the Information Ministry have maintained gulty silence on the whole question. Why didn't the Government of India react at all? Are these shows not seen by people in the Information Department before these are telecast? What is the procedure? The House should be taken into confidence. How was this programme cleared? Or, is there no procedure at all?

Madam, this has been appearing in newspaper columns. We did not raise it earlier on for the simple reason that we thought that the Government would take note of it.

Mahatma Gandhi is not only the Father of the Nation. He is widely acclaimed as the greatest humanist of the 20th century, nay, of the modern age. So, if somebody indulges in an analytical criticism of Mahatama Gandhi, we wouldn't object. Nobody is above analytical criticism. But this kind of abusive, slanderous attack! Even the mother of Mahatma Gandhi was not spared! Is this the way that we shold keep quiet? The Government owes an explanation to the country as to why it remained inactive and as to why it turned a Nelson's eye to all this for so many days?

श्री जनेश्वर मिश्र (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदया, सब से पहले तो मैं नेता विरोधी दल का सम्मान करता हूं। उन्होंने एक सुझाव दिया था कि सलीम साहब ने जिस शब्द का इस्तेमाल किया उसको स्टार टी०वी० से निकाल करके उसको रेकार्ड पर रहने दिया जाए, लेकिन आपका शुक्रिया अदा करूंगा कि आपने यह कहा कि इसे रेकार्ड पर नहीं रखा जाना चाहिए। नेता विरोधी दल से, नेता सदन से और इस पूरे सदन से मैं यह कहूंगा कि गंदगी गंदगी हुआ करती है और वह आदमी या वह समाज मूर्ख होता है जो कि उसके पैर में गंदगी लग जाए तो वह अपनी उंगली से उठा कर और नाक तक ले जाए और हम लोग जो संसदीय आचरण पर बहुत जोर देते हैं, किसी भी दल के नेता हों और और कहीं के हों, उसको उजागर न करें तो ज्यादा अच्छा है। यह एक बहुत बड़ा खतरा देश के सामने आया है। यह मामूली लहजे में इसको अगर हम झेल जायेंगे तो मैं यह अपसंस्कृति का खतरा है। गांधी कोई व्यक्ति नहीं थे बल्कि वह मूल्य थे, हिन्दुस्तान के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण इन्सानियत के लिए। हिन्दुस्तान के लोगों ने आजादी की लड़ाई के जमाने से ले करके और अब तक पता नहीं गांधी पर कितने किस्म के हमले किए? कुछ सोच के लोगों ने गांधी को गोली मार दी। अभी-अभी कुछ सोच के लोगों गांधी के स्वावलंबन और स्वदेशी की भावना को जला दिया। कुछ लोग उनको खराब भाषा का भी इस्तेमाल करते हैं। लेकिन वह सब के सब लोग हमारे देश के हैं। इनको समझा-बुझा करके, लड़-झगड़ करके, कड़ी भाषा का इस्तेमाल करके हम उनको सुधार सकते हैं। हमारे में गलती होगी वह हमको सुधार सकते हैं। वह अपने देश के भीतर वह हो सकता है। अपने पुरखों के बारे में, अपने राष्ट्रपिता के बारे में कोई कड़ी बात बोले उसको हम लोग आपस में झेल सकते हैं, लेकिन विदेशी मीडिया और आज जो लड़का पैदा हो रहा है, उसने गांधी को देखा नहीं है, अगर विदेशी मीडिया जिस बड़े पैमाने पर सरकार ने यहां पर प्रवेश करने की इजाजत दी है और जिस पर कई बार एतराज किया गया है, वह हमारी संस्कृति पर हमला बोल दें तो बड़ा मुश्किल हो जाएगा। बहुत मुश्किल हो जाएगा। गांधी

एक ऐसी शख्सीयत थे जो मरे नहीं थे, मारे गए थे। मारने वालों ने भी बाद में पछताया किया। इस तरह की शख्सीयत को कई लोग उलटी-सीधी बात बोलते हैं। मैं जानता हूं कि विदेशी मीडिया भी गांधी का कुछ बिगाड़ नहीं सकता। गांधी की शख्सीयत हिमालय पहाड़ के बराबर ऊंची है। कोई हिमालय पहाड़ को खुरपी से खोदना चाहे तो नीचे बैठ करके थोड़ा बहुत पत्थर को उठा कर निकाल दे और कहे कि मैं हिमालय को गिरा दूंगा तो उसको पागल के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता।

मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं मैडम, यह बहुत गंभीर मामला है। मैं जानता हूं कि आपको मीटिंग में जाना है।...(व्यवधान)

उपसभापति: मीटिंग है, इसलिए बोला। ...(व्यवधान) नहीं-नहीं, सब को जाना है।...(व्यवधान) मुझे भी जाना है।

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार): आप बाद में चले जाइये।...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, I have to sit here.

श्री जनेश्वर मिश्र: अगर गांधी नहीं रहे होते मैडम, सच तो यह है कि अगर गांधी नहीं रहे होते तो यह पार्लियामेंट नहीं रही होती, हम लोग भी नहीं रहे होते और यह बिज़नैस एडवाइज़री कमेटी नहीं रही होती। आप कह तो रही हैं कि जाना है, लेकिन मैडम, बिजनेस जिंदगी के लिए जरूरी है।...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Janeshwarji, don't try to turn the gun on me. I am sorry. Don't try to turn the gun on me. People have been coming and telling me that Chairman is waiting. Therefore, I don't explain everything. और यह जो आप भाषण कर रहे हैं, आप संशोधन में भी अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हैं और जहां तक मेरा सवाल है, मैं जिस मीटिंग से यहां आ रही हूं, उस मीटिंग में एक कानेर ने जोकि यू०एन० के प्रिजेंटेटिव हैं, गांधी जी की शख्सियत पर जो अल्फाज कहे हैं, उसके ऊपर मुझे फख्र है कि मैं गांधीजी के देश में पैदा हुई। तो मेरा अलग ही सवाल है।

श्री जनेश्वर मिश्र: मैं दो मिनिट में खत्म कर रहा हूं।

श्री दिग्विजय सिंह: अगर आप जाना चाहती हैं तो दूसरे वाइस-चैयरमेन को बिठा दें।

उपसभापति: श्री वी० नारायणसामी जी, आइए। आप जरा संक्षेप में बोलिए, आपके बाद सिकन्दर बख्त साहब को भी बोलना है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री वी० नारायणसामी) पीठासीन हुए]

श्री दिग्विजय सिंह: उपसभाध्यक्ष जी, मैं भी बोलना चाहूंगा।

श्री जनेश्वर मिश्र: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं गांधीजी के बारे में बात कर रहा था और जयपाल रेड्डी साहब ने अभी एतराज उठाया था कि सरकार इस पर कुछ भी नहीं बोल रही है, तो मैं समझता हूं कि गृह मंत्रीजी यहां बैठे हैं और वह बोलेंगे ही।

उपसभाध्यक्ष महोदय, श्री शंकर घोष जोकि इस विभाग के सेक्रेटरी हैं, "पायोनियर" में उनका इंटरव्यू छपा है जिसमें उन्होंने जो कहा है, उससे लगता है कि हम लोग कितने निरीह हो गए हैं नेता सदन कि महात्मा गांधी के बारे में कोई विदेशी मीडिया अनाप-सनाप बोलकर चला जाय और हमारे इस विभाग के सचिव, जोकि सबसे बड़े अफसर हैं, वह यह कहें कि विदेशी मीडिया के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए हमारे पास कोई कानून नहीं है। हम इतनी असहाय और निरीह हालत में पड़ गए हैं, किसी आर्थिक नीति के चलते या दूसरों को दावत देकर हमने अपने हाथ इस तरह से बांध लिए हैं कि हमारे पुरखों के बारे में जो कोई भी गाली देकर चला जाये, हम चुपचाप उसको झेलते चले जाएं तो उससे गांधी की तस्वीर बिगड़ेगी। अभी मैडम ने मुझे टोक दिया, मैं कह रहा था कि आज का कैच घुमा बच्चा जिसने कि गांधीजी को देखा नहीं है,वह उस मीडिया का प्रोग्राम देखकर गांधी की वही बिगड़ी तस्वीर देखेगा क्योंकि थोड़े दिनों के बाद मीडिया के जरिए वह देश में और दुनिया में फैलेगी।

महोदय, दुनिया के किसी भी देश में अगर गांधी के बारे में इस तरह का प्रोग्राम दिखाया जाता है, तो उस पर भी हिंदुस्तान की तरफ से एतराज होना चाहिए था, वह तो हिंदुस्तान में दिखाया गया है क्योंकि इससे हमारे बच्चों की जो राय बनेगी गांधी जी के बारे में, वह बहुत खराब राय बनेगी।

महोदय, अभीमैं टैगोर पर गुरुदास दासगुप्त जी का भाषण सुन रहा था। बुनियादी तौर पर तो उनका नाम रवीन्द्र नाथ ठाकुर था, लेकिन अंग्रेजों ने उसे बिगाड़कर टैगोर कर दिया और हम लोग "टैगोर-टैगोर" करने

लगे। सन् 47 के पहले जो हिंदुस्तान का नक्शा हम लोग अपने लड़कपन में स्कूल में देखा करते थे, 47 के बाद वह नक्शा अब टूटा हुआ है। धीरे-धीरे अब का हिंदुस्तान का जो नक्शा है, वही नक्शा बनने लगा है। ये मीडिया, अंतर्राष्ट्रीय मशीनें हमारे पुरखों के, हमारे राष्ट्र के स्वरूप को, उसकी बनावट व सजावट को बनाने-बिगाड़ने करते हैं। इससे हमको सावधान रहना चाहिए। मैं मांग करूंगा कि अगर इस तरह की हरकत कोई स्टार टी०वी० या दूसरी विदेशी मीडिया करता है तो भारत सरकार को ऐसा कानून बनाना चाहिए कि जो कोई भी इस तरह की हरकत करता है, उस पर भारत के कानून की परिधि के तहत कड़ी-से-कड़ी कार्यवाही की जाए, जरूरत पड़े तो उसको समाप्त कर दिया जाए और रोक दिया जाए जैसे कि हमारी हिंदुस्तानी फिल्मों के लिए कानून है। अगर इससे कम पर इजाजत दी जाती है तो यह एक तरह से हिंदुस्तान की महान संस्कृति के साथ हम मजाक करेंगे।

महोदय, महात्मा गांधी और आजाद भारत माता—दोनों के एक ही माने हुआ करते हैं। अगर महात्मा गांधी नहीं होते, मैंने यह ऐसे ही हंसने के लिए नहीं कह दिया, अगर महात्मा गांधी नहीं होते तो यह पार्लियामेंट नहीं होती और न बिजनेस एडवायजरी कमेटी होती महात्मा गांधी नहीं होते तो हिंदुस्तान आजाद नहीं होता। इसलिए आजाद भारत माता का अपमान महात्मा गांधी का अपमान करते हुए स्टार टी०वी० ने किया है। इसलिए मैं निवेदन करूंगा नेता सदन से जोकि भारत के गृह मंत्री भी हैं कि वह इस सदन को आश्वासन दें कि भविष्य में इस तरह से कोई भी मीडिया कार्यवाही करेगा तो सरकार कड़ा-से-कड़ा कानून बनाकर उसको रोकने के लिए प्रतिबंधात्मक कदम उठाएगी।...

(व्यवधान).

श्री जनेश्वर मिश्र: और शंकर घोष के खिलाफ, जिसने इतने निकम्मेपन का बयान दिया और संदेश दिया, उसके लिए भी उनके खिलाफ कार्यवाही करने के बारे में आश्वासन दें।...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly take your seat. I ask Shri Sikander Bakht to speak.

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त): सदर साहब, मुझे दो लफ्ज कहने हैं। पहले तो मैं वेलगेरिटी के सवाल को, जो तौहीन महात्मा गांधी की की गई है उससे अलहदा करना चाहता हूं, जिस किस्म की वेलगेरिटी का सिलसिला चल रहा है हमारे टी०वी० सेट पर, उसकी मुजम्मत हजार बार हो चुकी है, मगर लगता है कि किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही, लेकिन इस सवाल को मैं उस सवाल से अलहदा रखना चाहता हूं। समझ में नहीं आता, हम किस गए वह सुनकर, क्या कयामत है कि इस मुल्क में बैठे हुए यह हो सकता है। हमारे अजीज साथी जनेश्वर मिश्र ने दुरुस्त कहा, मेरे सामने यह अखबार है, भास्कर घोष साहब का यह बयान है। क्या मायने है, हिंदुस्तान में कोई इस किस्म का सिलसिला चलता हो और हम बिल्कुल बेबस हों और कुछ न कर सकते हों? हम अपने को यह स्टार टी०वी० वगैरह के सुपुर्द करने के लिए तैयार नहीं हैं। हम अपने मुल्क की ट्रेडीशन को, रिवायत को इन लोगों के सुपुर्द करने के लिए तैयार नहीं हैं।

सदर साहब, बिल्कुल दुरुस्त कहा गया कि गांधी के नाम से पूरे हिंदुस्तान का नाम जुड़ा हुआ है। इसलिए मैं बगैर लंबे-चौड़े भाषण के यह कहना चाहता हूं कि जैसा मलकानी साहब ने प्रस्ताव रखा है, मुकम्मल सजा मिलनी चाहिए स्टार टी०वी० को। स्टार टी०वी० को हिन्दुस्तान में दिखाए जाने की, एक किस्म से, इजाजत नहीं होनी चाहिए। इसे किसी न किसी वेस्ट पेपर बास्केट में, जहन्नुम में डाल देना चाहिए। मैं बिल्कुल अलहदा रखकर सिर्फ इस सवाल के बारे में कहना चाहता हूं कि यह पूरी कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए। अगर ऐसा कानून नहीं है। तो नया कानून बनाएं और इन जैसे स्टार टी०वी० वगैरह को हिन्दुस्तान से निकाला या हिन्दुस्तान के कल्चर को इन लोगों से दूर रखा जाए। सिर्फ मुझे यही कहना था।

"इंतशार ودھی دل "نثری سلندر بخت"
صدر صاحب - مجھے دو لفظ کہنے ہیں - پہلے تو
میں ویلگریٹی کے سوال کو - جو توہین مہاتما
گاندھی کی کی گئی ہے اس سے علیحدہ کرنا چاہتا
ہوں جس قسم کی ویلگیریٹی کا سلسلہ چل
رہا ہے ہمارے ٹی - وی - سیٹ پر - اسکی
مذمت ہزار بار ہو چکی ہے - مگر لگتا ہے کہ
کسی کے کان پر جوں تک نہیں رینگ رہی ہے

कहना चाहता हूं कि यह पूरी कानूनी कार्रवाई होनी चाहिये - अगर ऐसा कानून नहीं है तो नया कानून बनाइये - और ऐसे जैसे स्टार टी-वी- वगैरह को हिन्दुस्तान से निकाल कर हिन्दुस्तान के कल्चर को उन लोगों से दूर रखा जाए - सिर्फ मुझे यही कहना था।

श्री दिग्विजय सिंह (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, इस संसद में हम लोगों ने अपने संविधान में इस बात को रखा कि गांधी जी इस देश के राष्ट्रपिता हैं और हमने दो ही बात कही थीं कि जो इस तिरंगे का, जो हमारा राष्ट्रीय झंडा है, उसका जो अपमान करेगा और हमारे राष्ट्रपिता का जो अपमान करेगा, वह देशद्रोही कहलाएगा। भारत की संसद ने इस चीज को संविधान में रखा था। जो बात स्टार टी-वी- पर की गई, जो हम लोगों के सामने रखी है सलीम साहब ने, इन बातों के थोड़ा सा भी संदर्भ में अगर हम देखें तो यह वही शक्तियां हैं, साम्राज्यवादी शक्तियां, जिनके दिल पर दुनिया में आज किसी बड़ी शक्ति को उभरते हुए देखकर सांप चल रहे हैं।

महोदय, गांधी को गाली देना कोई मामूली घटना नहीं है। किसी भी बड़े देश को जब भी तोड़ने की साजिश हुई दुनिया में, तो उनके पुरखों को गाली दी गई। आज से तीन-चार साल पहले जब सोवियत संघ को तोड़ना था तो लेनिन और मार्कस को गाली दी गई। आज जब इस देश की एकता और अखंडता पर उन शक्तियों का प्रहार हो रहा है तो गांधी को इस देश के अंदर भी गाली दिलवाई गई और अब प्रचार तंत्र से दुनिया को, जहां से गांधी को गाली देखते देखा जा सके, दिखलाया जा रहा है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कोई लंबा-चौड़ा भाषण इस विषय पर नहीं करना चाहता, लेकिन इस सदन में इस बात को आपके सामने रखना चाहूंगा कि आखिर इसकी सजा क्या है? गृह मंत्री जी का मामूली बयान इस सजा को अगर सुना सकता हो तो सुनाए, लेकिन हम आज इस बारे में बहुत ही स्पष्ट शब्दों में जानना चाहते हैं। हमारे पुरखे गांधी जी की विरासत, इंसानियत का दुनिया से जो भी रिश्ता रहा हो, सारी दुनिया गांधी जी के सामने नतमस्तक है। दुनिया के बड़े-बड़े लोगों ने कहा कि आने

लेकिन इस सवाल को मैं इस सवाल से अलग रखना चाहता हूं समझ में नहीं आता हम पिल पड़े - ये सुनकर - क्या कयामत है कि इस मुल्क में बैठते हुए ये हो सकता है - हमारे अजीज साथी

जेठमलानी साहब ने दुरुस्त कहा - मेरे सामने ये अखबार है - बहा सकर घोष साहब का ये बयान है - क्या मतलब है - हिन्दुस्तान में कोई इस किस्म का सिलसिला चलता हो और हम बिल्कुल बेबस हों और कुछ न कर सकते हों हम अपने को ये स्टार टी- वी- वगैरह के सुपुर्द करने के लिये तैयार नहीं हैं हम अपने मुल्क की ट्रेडीशन को - रवायात को उन लोगों के सुपुर्द करने के लिये तैयार नहीं हैं -

सदर साहब बिल्कुल दुरुस्त कहा गया कि गांधी जी के नाम से पूरे हिन्दुस्तान का नाम जुड़ा हुआ है - इसलिये मैं बगैर किसी चौड़े बहस के ये कहना चाहता हूं - कि जैसा मलकानी साहब ने पेशकश की है - मुकम्मल सजा मिलनी चाहिये स्टार टी- वी- को - स्टार टी- वी- को हिन्दुस्तान में दिखाये जाने की एक मिनट से इजाजत नहीं होनी चाहिये - इसे किसी न किसी वेस्ट पेपर बास्केट में - जहन्नुम में डाल देना चाहिये - मैं बिल्कुल अलग रखकर सिर्फ इस सवाल के बारे में

आने वाली पीढ़ियां इस बात को शायद स्वीकार करेगी या नहीं कि मांस के लोथड़े में भी ऐसा इंसान पैदा हुआ था। यह गांधी के बारे में कहा गया। यह हमने नहीं कहा, आइंसाटाइन जैसे लोगों ने कहा। आज गृहमंत्री जी, मलकानी साहब का जो प्रस्ताव है, उस प्रस्ताव से मैं पूर्णतया सहमत हूं। गांधी को गाली देने वाले इस स्टार टी०वी० कंपनी को हिंदुस्तान से बाहर किया जाए, इसको बंद किया जाए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैंने पहले भी इस विषय से संबंधित एक चर्चा में कहा था कि सीता, सावित्री की संस्कृति और स्टार टी०वी०, दोनों एक साथ नहीं चल सकते इस देश के अंदर। अगर इस देश को दुनिया के अन्य देशों की तरह बनाना है तो यह हमारी संस्कृति के प्रतिकूल है और अगर उस पर देश को चलाना चाहेंगे तो यह नहीं चलेगा। इसलिए मैं इस प्रकरण में कड़ी से कड़ी सजा की मांग करता हूं और यह कहना चाहता हूं कि स्टार टी०वी० को इस देश में बंद करने की कोशिश की जाए।

SHRI JOHN. F. FERNANDES (Goa): Sir, I fully assocaite myself with what my colleague Mr. Salim has said. All the time we accuse the STAR TV; I am not supporting it. This programme is an Indian programme, sponsored by Indian companies and the producer is also from Bombay. The interview was also an Indian national. I do not know whether the interviewer was holding Indian nationality or she was a foreign national. Why are no cases being filed against this Indian national in Bombay? Sir, we have the Prevention of Insult to National Honour Act. Why do we not give exemplary punishment to our national? Again, I want to say that many Government officials are being shown in this particular programme and they are police officials, etc., who are getting interviews in this particular programme. I want to know from the Home Minister whether they have sought permission from the Government. Thank you. Sir.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S.B. CHAVAN): Sir, on this issue, on both sides of the House, I do not think there can be any scope for difference. The only point which requires to be considered will be that we will have to properly examine the case from the legal point of view, so that if we initiate any action, there should be no question of going back on the same. I can assure the House that I am in full agreement with you that we are prepared to make the law the strictest...(*Interruptions*)...

SHRI T.A. MOHMAMMED SAQHY (Tamil Nadu): Whether there is a law...(*Interruptions*)... We must take action.

SHRI S.B. CHAVANA: Just wait...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. saqhy, kindly hear the Minister. ...(*Interruptions*)...

SHRI S.B. CHAVAN: I can well understand that there is a hurt feeling. Everybody is bound to react, the way they are reacting. But, if by any chance the Legal Department does not come to our rescue, then, might be, we will have to go in for a new legislation and I can...(*Interruptions*)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उनको "टाडा" में बंद करो, वह लॉ है, उसकी डेफिनेशन में भी आता है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly hear the Minister...(*Interruptions*)...

SHRI S.B. CHAVAN: But, before the whole thing is examined properly, I cannot possibly make any commitment. But, this commitment I am making that if the present Act falls short of the requirement, then, of course, we will have to think in terms of going in for a new legislation. The sentiments will be reported to the Cabinet, which will be able to take a decision in the matter very soon.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Shri Dineshbhai Trivedi. Are you going to speak on your subject or not?

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI (Gujarat): No, one of the proposals and sentiments of the House was that you will. ...(*Interruptions*)....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Are you going to speak on your subject or are you speaking on a different subject? I called your name for a different subject. You go to your own subject.

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI: (Gujarat): But, I am very much within my right to say that this is an important policy issue...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): I am sorry ... (*Interruptions*)

RE: FARE HIKE BY IAC

SHRI DINESHBHAI TRIVEDI (Gujarat): Sir, we have just discussed that there has been an attack all over on our cultural heritage, on our economic front. I am so surprised and outraged that there is hardly any reaction and the reaction which has come, has come after provocation and I am again on a similar subject, an attack on our national integrity as well. Sir, you may find it a little funny as to what relation it has. My subject matter is protest against the proposed hike of 20 per cent in the Indian Airlines airfares, and what link it has with national integrity. It has. Civil aviation is a very, very sensitive area in any country. We have our North-East we have our Jammu and Kashmir, we have places like Port Blair and other far-flung areas and they are cut off from the mainland. The only transportation is by air. Now, you are not sparing that even.. I would like to ask as to what is this business of increasing fares arbitarily without going into the details of it. Here it is like a Mughal Badshah; one fine day somebody decides that they are going to increase the fuel and the fare is increased. We thought with the new liberalisation policy—I would seek the attention of Dr. Manmohan Singh here—we will have the benefit of competition; the consumers will have the benefit of an open-sky policy. Time and again, whenever we objected, we were told, "Look, here market forces will act."

1.00 P.M.

There is going to be competition. There are going to be many places in the market and ultimately the benefit of the competition will go to the consumer. But, what is happening here? It is nothing but cartelization, led by none other than our national carrier and it is a matter of shame that we are arbitrarily increasing the fares and I can guarantee you that the moment you increase the fares by whatever percentage, the private carrier will follow suit. There is no competition, there is no benefit, it is pure and simple cartelization. I demand a proper aviation policy from the Government. I am afraid there is no policy on Information and Broadcasting, there is no policy on Civil Aviation. May I request through you, Sir, or rather demand through you, Sir, let there be an Aviation Policy as it does not give a right to the Government to increase the fare as and when they want. I know the answer. The answer is, now Indian Airlines is a limited company and it does not fall under the purview of the Government. Even FAA, the Americans, have such a stringent control on the increase of freight under their anti-trust law. We must examine this, that Government has no business to say that we have nothing to do. They have certainly everything to do because aviation is a very sensitive area. Before I discuss threadbare, I demand that no such increase will take place because, again there is a rumour in the air or some information is there that even the petroleum price is going to increase, so again there will be a snow-balling effect. So, I demand through you, Sir, that before this happens there should be a threadbare examination of this subject.

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, if the fare of